हिन्दी गद्य का उदय और नवजागरण

अंजू बाला
शोधार्थी; हिन्दी विभाग
एम. फिल. दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांशः

'गद्य' आधुनिक-काल की देन है । यह परिवर्तन खड़ी बोली से हुआ । आधुनिक काल में साहित्य में जो परिवर्तन हुए उसके कारण उस समय के समाज में निहित है । इस परिवर्तन के तीन मुख्य कारण माने जाते है । पहला भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना दूसरा पशिचम विचारों तथा भावों का आयात, अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव। आचार्य रामचन्द्र भुक्ल आधुनिक-काल को 'गद्य' नाम दिया है । उनका कहना है कि ब्रजभाशा में भी गद्य लिखा गया । वह भाशाएँ एवं टीकाएँ थी । ब्रजभाशा में जो गद्य था वह आधुनिक गद्य नहीं था । उसमें मध्यकालीनता है, इस कारण या तो वे वार्ताएं है या भाश्य या टीका है । गद्य आधुनिक युग की देन है । आधुनिक युग में जो गद्य लिखा गया । उसकी भाश खड़ी बोली थी । हालाकि उस समय कविता ब्रज में थी । कवियों में यह बेचैनी थी कि कविता ब्रज में और 'गद्य' खड़ी बोली में लिखा जा रहा था । आधुनिक काल में दो भाशाएँ थी एक ब्रजभाशा और दूसरी खड़ी बोली ब्रजभाशा मथुरा, वृंदावन, मिर्जापुर आदि तथा खड़ी बोली-मेरठ, हरियाणा, दिल्ली आदि में बोली जाती थी । जब बोलियॉ अपने क्षेत्र से बाहर निकलती है तो उनका क्षेत्र विस्तृत हो जाता है तो इस कारण गद्य का प्रारम्भ खड़ी बोली में हुआ । खड़ी बोली भाशा बन गई और उसने ब्रजभाशा को अपदस्त कर दिया । इस कारण आधुनिक युग में खड़ी बोली ने अपना वर्चस्व स्थापित किया 'हिन्दी नए चाल में ढला या नये चाल की हिन्दी १९७३ का यह प्रसिद्व मुहावरा था । खड़ी बोली ही भाशा क्यों बनी उसके निम्न कारण है ।

अंग्रेज पूरे भारत को जीतना चाहते थे किन्तु वह दिल्ली को जीते बिना भारत को नहीं जीत सकते है। दिल्ली पर मुगलों का भासन था किन्तु वह धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा था । दिल्ली के व्यापारी बंगाल जा रहे थे क्योंकि यहॉ व्यापार अधिक नहीं था। १९०५ में इन्होने बंग-विभाजन कर दिया । अंग्रेज भारत की धन-दौलत को अपने देशा सुनियोजित ढंग से ले गए । वह चाहते थे कि भारत के लोग उनके समक्ष हो जाए। अंग्रेजों ने हमारे मन में डाला कि हमें दुनिया की चीजों से कोई मतलब नही है । सांस्कृतिक दृश्टि से कहा ये लोग निट्ठले है । ईश्वर को मानने वाले है । इस प्रकार १८०० में पहली बार प्रिटिंग प्रेस आई जिससे 'गद्य' का विकास हुआ । मध्यकाल में लोगों के मन में ईशवर के प्रति आस्था थी किन्तु आधुनिक काल में लोगों को ईश्वर की सत्ता पर संदेह होने लगा । इस कारण लोगों में नई चेतना की उत्पत्ति हुई जिसके कारण नवजागरण आया । नवजागरण में स्त्री शिक्षा, समाज-सुधार, धर्म आंडम्बरो, समाज की कुरीतियों को उल्लेखित किया गया ।

१. खड़ी बोली

आधुनिक-काल में गद्य का प्रचार बहुत तेजी से हुआ । आज हम लोग जिस भाशा में लिखा और बोला करते है उसे 'खड़ी बोली' कहा जाता है । मुगल दरबार की समृद्वि जब ह्रास होने लगी, और लखनउ, पटना तथा मुशिर्दाबाद आदि में नई नवाबी राजधानिया सम्पन्न होने लगी तो दिल्ली के गुणियो और व्यवसायियों ने पूरब की ओर मुँह किया ।उनके साथ ही दिल्ली की शिष्ट भाशा सर्वत्र फैलने लगी । अठारवीं भाताब्दी में निशचित रूप से दिल्ली की शिष्ट भाशाचारों ओर फैल चुकी थी । खड़ी बोली में गद्य ग्रंथ लिखे जाने लगे किन्तु वह ब्रजभाशा-गद्य से एकदम मुक्त नहीं हो पाए ।

२. हिन्दी गद्य का सूत्रपात

उन्नीसवीं भाताब्दी के प्रारम्भिक वर्शो में वास्तविक रूप में हिन्दी गद्य का सूत्रपात हुआ। इस समय तक साहित्य में ब्रजभाशा का ही प्राधान्य था और उन्नीसवीं भाताब्दी के मध्य तक और कुछ बाद तक भी नई पुस्तकों की टीकाएँ ब्रजभाशा के गद्य में लिखी गई । परन्तु बोली में लिखा जाने वाला गद्य में अंत तक साहित्य का महत्वपूर्ण और प्रभावशाली वाहन बना । इन्हीं दिनों अंग्रेजों के प्रयत्नों से कलकते के फोटे विलियम कॉलेज की स्थापना हुई और अंग्रेज

अफसरों ने गम्भीरतापूर्वक इस देश की भाशाओं के अध्ययन का प्रयत्न किया । हिन्दी कॉलेज के हिन्दू-उर्दू अध्यापक सर जान मिल क्राइस्ट ने हिन्दु और उर्दू में पुस्तकें लिखने का प्रयत्न किया । इन्होने कई मुंशियों की नियुक्ति की । सर जान गिल क्राइस्ट प्रधान रूप से हिन्दुस्तानी या उर्दू के पक्षपाती थे, परन्तु वे जानते थे कि उस भाशा की आधारभूत भाशा 'हिंदवा, या हिन्दुई थी, इसी आधारभूत जानकारी के लिए उन्होने कुछ भाशा-मुंश्यिों की सहायता प्राप्त की । भाशा-मुंशियो, में श्री लल्लू लाल और सदल मिश्र नामक दो पन्डितो ने हिन्दी गद्य में पुस्तकें लिखी ।

३. फोर्ट विलियम कॉलेज का योगदान

जिन दिनों सर जान गिलक्राइस्ट लल्लूलालजी और सदल मिश्र से पुस्तकें लिखाने की व्यवस्था कर रहे थे, उसके थोड़ा-पूर्व दिल्ली निवासी मुंशी सदासुखलाल ने बहुत ही सुन्दर भाशा में भागवत की कथा का 'सुखसागर नाम से भाशांतर किया और लखनऊ में मुंशी इंशाअल्ला खाँ ने' रानी केतकी की कहानी नाम से एक ऐसी कथा लिखी थी जिसमें अरबी, फारसी के भाब्दों को हटाकर भाुद्व हिन्दी लिखने का प्रयास था, कालेज जिन दिनों नए साहित्य के निर्माण की ओर दलचित था, उन दिनों निशचित रूप से खड़ी बोली शिष्टजन के व्यवहार की भाशा हो चली थी, सर गिलक्राइस्ट के बाद इस विभाग में प्राइस की नियुक्ति हुई थी । वें हिन्दी के अधिक अनुकूल थे पर उनके कार्यकाल में भी हिन्दी गद्य के निर्माण में विशेश उन्नति नही हुई । वस्तुतः हिन्दी गद्य उन दिनों अपनी भीतरी प्राणशक्ति के बल पर ही आगे बढ़ा।

४. मुंशी सदासुखलाल

मुंशी सदासुखलाल जी नियाज दिल्ली के निवासी थे । ईस्ट इंडिया कम्पनी की अधीनता में चुनार के अच्छे पद पर कार्य करते थे । इन्होने 'विश्णुपुराण' के नैतिक- उपदेशाात्मक प्रसंगो के आधार पर 'सुखसागर' की रचना खड़ी बोली गद्य में की । इनकी खड़ी बोली संस्कृति निश्ठा है और गद्य प्रवाहपूर्ण लेकिन पण्डिताउपन से वह भी नही बच सके है ।

५. इंशा अल्ला खाँ

इशां अल्ला खाँ, उर्दू के प्रसिद्व भाायर थे । इन्होने खड़ी बोली हिन्दी में 'उदयभानचरित या रानी केतकी की कहानी, की रचना की । भाशा के सम्बन्ध में उनकी प्रतिज्ञा थी जिसमें हिन्दवीं छूट और किसी बोली का पुट न मिले ....बाहर की बोली और गाँव वाली कुछ उसके बीच न हो । इन्होने बड़ा चटकीला, मटकीला, मुहावरेदार और सानुप्रास वाक्यों वाला गद्य लिखा, जिसकी कलात्मकता, चमत्कार और प्रवाहपूर्णता को स्वीकार करना पडेगा । बीच-बीच में अत्यन्त स्वाभाविक गद्य के नमूने उनकी गद्य-रचना में मिलते है, लेकिन समग्रतः उसमें कृत्रिमता व्याप्त है, इसलिए हिन्दी के भावी गद्य लेखकों के आर्दा यह भी नही बन सकें ।

६. पं.सदल मिश्र

पंडित जी आरा बिहारी के निवासी थे । इसलिए स्वभावतः उनकी भाशा में पूरबी प्रयोग मिलते है । फिर भी उनकी भाशा अधिक प्रवाह और वह परवत्ती साहित्य-भाशा का अच्छा मार्गदर्शाक कही जा सकती है । यद्यपि पं. सदल मिश्र की भाशा अधिक व्यवस्थित अधिक साफ और अधिक चुस्त है । तथापि फोटे विलियम कालेज के अधिकारियों को वह बहुत पंसद नहीं थे । उनकी लिखी भाशा का कॉलेज में विषेश सम्मान नही हुआ, आगे चलकर लल्लूलालजी के प्रेमसागर को जितना गोरव दिया गया उतना सदल मिश्र की किसी रचना को नही दिया गया, परन्तु सदल मिश्र की भाशा में भावी खड़ी हिन्दी का मार्जित रूप स्पश्ट हुआ है । आगे चलकर साहित्य में जो भाशा ग्रहित हुई उसका गठन बहुत कुछ सदल मिश्र की भाशा आदर्शा पर हुआ । धीरे-धीरे गद्य ने ब्रजरंजित प्रयोगों को छोड़ दिया और लल्लूलालजी की भौली साहित्य में ग्रहित नही हो सकी । मुंशाी सदासुखलाल की भाशा में भी ब्रजरंजित प्रयोग है परन्तु उसमें भी यथासम्भव ब्रजभाशा के प्रयोगों से बचने का ही प्रयत्न हैं । मुंशाी जी और सदल मिश्र जी की भाशा का रूप ही कट-छँटकर और साफ सुथरा होकर हिन्दी साहित्य का वाहन बना ।

७. खड़ी बोली गद्य के विकास में ईसाई मिशानरियों का योगदान

ईसाई मिशानरियों ने ईसाइयत का प्रचार करने के लिए दोहरी नीति अपनाई । एक ओर उन्होने शिाक्षा क्षेत्र में यह सोचकर कार्य किया कि शिाक्षित भारतीय ईसाई धर्म की ओर आकर्शित होगें और उसे अपनाऐगें क्योंकि भारतीय धर्मो

को वह अज्ञान और अंधविशवासों के अतिरिक्त और कुछ मानते ही नहीं थे । इसके लिए उन्होने स्कूल और कॉलेज खोले । स्कूलों में शिाक्षा का माध्यम अधिकाशांतः खड़ी बोली को रखा । स्कूल स्तर की भूगोल, इतिहास, धर्मशाास्त्र, राजनीति, चिकित्सा, अर्थशाास्त्र, विज्ञान, साहित्य, ज्योतिश व्याकरण आदि विभिन्न विशयों की पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए कलकत्ता, आगरा, इलाहाबाद आदि विभिन्न स्थानों पर स्कूल बुक सोसाइटियाँ स्थापित की और मुद्रणालय भाुरू किये । इससे विविध विशयों को व्यक्त कर सकने में समर्थ गद्य का विकास हुआ । दूसरी ओर उन्होने बाइविल, उसके विभिन्न अंशाो और ईसाई धर्म के पक्ष में और अन्य धर्मो के विरोध में पुस्तक पुस्तिकाएं खड़ी बोली गद्य में प्रकाशित एवं वितरित की, पादरियों ने प्रवचनों के लिए भी खड़ी बोली को अपनाया । इससे खड़ी बोली का जो गद्य विकसित हुआ वह अपनी विचित्रताओं के कारण ईसाई गद्य कहा जा सकता है ।

८. आर्यसमाज का खड़ी बोली गद्य में योगदान

हिन्दी भाशी क्षेत्रों में जिस सुधारवादी आंदोलन ने सबसे अधिक काम किया, वह आर्यसमाज है । यद्यपि स्वामी दयानंद सरस्वती स्वयं संस्कृत के गुजराती भाशी विद्वान थे और आर्य-समाज की स्थापना भी उन्होने बम्बई में की थी तथापि उन्होने यह अनुभव कर लिया था कि केवल हिन्दी भाशी क्षेत्रों में ही नहीं, अपितु गुजरात और पंजाब आदि में भी यदि उनका संदेशा प्रचारित हो सकता है तो खड़ी बोली हिन्दी के माध्यम से ही इसलिए उन्होंने स्वयं अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाशा', संस्कार विधि, श्रृग्वेद भाश्य-भूमिका आदि हिन्दी में प्रस्तुत किये वे अपने भाशण भी हिन्दी में देने लगे, यद्यपि वे पहले संस्कृत में ही भाशण देते थे और भाास्त्रार्थ भी संस्कृत में ही करते थे । उनकी प्ररेणा से उनके अनुयायी भी खड़ी बोली में ही लेखन, प्रवचन और भाास्त्रार्थ करने लगे। इसके कारण आर्य सामाजियों के द्वारा प्रचुर मात्रा में खडी बोली में गद्य लिखा गया और उसका परिमार्जन हुआ । १८६३ ई० के आसपास पंजाब के आर्यसमाजी प्रतिभाशाली पंडित श्रृद्धाराम फिल्लौरी के लेखो और व्याखानों की बड़ी धूम मची । उन्होने खड़ी बोली गद्य में अनेक रचनाऐं लिखी जिनमें से 'भाग्यवती और 'सत्यामृत'-प्रवाह विशोश प्रसिद्व हुउ । फिल्लौरी जी के हिन्दी गद्य के लिए योगदान को सभी ने स्वीकार किया है उन्हे अपने गद्य पर स्वयं को भी गर्व हुआ । सन् १८८१ ई० में अपनी मृत्यु के समय उन्होने कहा था ''भारत में भाशा के दो लेखक थे एक काशाी में दूसरा पंजाब में काशाी के लेखक से तात्पर्य था भारतेन्दु हरिशाचन्द्र से और पंजाब में वे स्वयं थे ।

९. पत्रकारिता और साहित्य

खड़ी बोली हिन्दी गद्य और भारतेन्दु युगीन साहित्य के विकास में उस काल के पत्र-पत्रिकाओं का बडा योगदान है । इस काल की सारी जागृति, सारी सुधारवादी चेतना और सारा साहित्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही सामने आया और जनसाधारण तक पहुँचा । हिन्दी के पहले साप्ताहिक 'उदत मार्तड का प्रकाशान कलकत्ता से ३० मई १८२६ को प्रारम्भ हुआ और ग्राहकों के अभाव में ४ दिसम्बर १८२७ को बंद हो गया । इससे पहले राजा राममोहनराय ने 'बगदूत का ही हिन्दी संस्करण भी निकाला था । कलकत्ता से ही हिन्दी का पहला दैनिक समाचारपत्र. भयामसुन्दर सेन ने जून १६५४ में 'समाचार सुधावर्शण' के नाम से निकाला, जो कई वर्शो तक प्रकाशित होता रहा । बनारस से जनवरी १६४५ में गोविन्द रघुनाथ धते के सम्पादन में राजा शिावप्रसाद ने बना रस्म अखबार निकाला । हिन्दी क्षेत्र से निकलने वाला यह पहला पत्र था । इसकी भाशा का झुकाव अभी फारसी भाब्दों की ओर अधिक था । शिामला अखबार, मालवा अखबार, काशाी पत्रिका आदि इस समय निकलने वाले पत्र भाशा की दृश्टि से उर्दू के ही पत्र थे । हिन्दी भाशा को सच्चे अर्थो में अपनाने वाले काशाी के 'सुधाकर' और आगरा के 'बुद्वि प्रकाशा' जैसे पत्र थे ।

इन पत्रों में साहित्य का प्रकाशान नगण्य था, समाचारों का प्रकाशात ही मुख्य था । साहित्य का प्रकाशान तो मुख्यतः उन पत्र-पत्रिकाओं में हआ जिन्हें उस समय के साहित्यकारों ने निकाला । स्वयं भारतेन्दु हरिशाचन्द्र ने 'कविवचन सुधा' और 'हरिशाचन्द्र मैंगजीन' का प्रकाशान किया । उनके अतिरिक्त प्रतापनारायण मिश्र ने ब्राहमण, लाला श्रीनिवासदास ने 'सदादर्शा, तोताराम ने 'भारतबंधु' कन्हैयालाल ने 'मिश्रविलास' देवकी नन्दन तिवारी ने 'प्रयाग समाचार', राधाचरण गोस्वामी ने भारतेन्दु आदि पत्र निकाले । इनके अतिरिक्त इस काल में निकले भारतमित्र 'सारसुधानिधि' 'उचित वक्ता' 'हिन्दी बगवासी' आदि का उल्लेख भी आवशयक है । राश्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना जगाने, रूढियों और अंधविशवासों से मुक्त करके समाज सुधारने और भारत के भविश्य को उज्जवल बनाने के अतिरिक्त इनका उद्देशय ''यथा हिन्दी भाशा का प्रचार करना व हिन्दी लिखने वालों की संख्या-वृद्वि'' करना भी था ।

भारतेन्दु-युग का अधिकांशा साहित्य पहले-पहल इन्ही पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सामने आया और हिन्दी भाशा का परिमार्जन हुआ । भारतेन्दु ने 'कालचक्र में यह सच ही लिखा था कि १८७३ में ''हिन्दी नये चाल में ढली''।

१०. प्रेस की स्थापना

वे क्षेत्र जो पहले से ही अंगेजों के अधीन आ गये थे वहाँ ऐसे परिवर्तन होने लगे थे जो एक नये और आधुनिक भारत के निर्माण के सूचक बने । विद्वानों ने इस सन्दर्भ में दो बातों की तरफ खासतौर पर ध्यान दिया है । हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस परिवर्तन को रेखांकित करते हुए लिखा है, ''वस्तुतः साहित्य में आधुनिकता का वाहन प्रेस है और उनके प्रचार के सहायक है, यातायात के समुचित साधन पुराने साहित्य में नये साहित्य का प्रधान अंतर यह है कि पुराने साहित्यकार की पुस्तकें प्रचारित होने के अवसर कम पाती थी, राजाओं की कृपा, विद्वानों की गुणग्राहिता, विद्यार्थियों के माध्यम में उपयोगिता इत्यादि अनेक बाते उनके प्रचार की सफलता का निर्धारण करती थी । प्रेस हो जाने के बाद पुस्तकों के प्रचारित होने का कार्य सहज हो गया और फिर प्रेस से पहले गया की बहुत उपयोगिता नहीं थी । प्रेस होने से उसकी उपयोगिता बढ़ गई और विविध विशयों की जानकारी देने वाली पुस्तकें प्रकाशित होने लगी । वस्तुतः प्रेस ने साहित्य को प्रणातांत्रिक रूप दिया । समाचार पत्र, उपन्यास, आधुनिक ढंग के निबन्ध और कहानियाँ , सब प्रेस के प्रचार के बाद लिखी जाने लगी । अब साहित्य के केन्द्र में कोई राजा और रईस नही रहा बल्कि अपने घरों में बैठी हुई असंख्य अज्ञात जनता आ गई । इस प्रकार प्रेस ने साहित्य के प्रचार में उसकी अभिवृद्धि में और उसकी नई-नई भााखाओं के उत्पन्न करने में ही सहायता नही दी बल्कि उसकी दृश्टि के समूल परिवर्तन में ही योग दिया ।'' द्विवेदी जी ने यहाँ इस बात को रेखांकित किया है कि रईसों, राजा और नवाबों की तरह अंग्रेजों ने कुछ नही किया। साहित्य और कला के लिए लेकिन दूसरे ढंग से उन्होने ''हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के उद्धार और उन्नयन का कार्य बड़ी ईमानदारी और मुस्तैदी के साथ किया। स्वयं उनके भाब्दों में ''इतिहास और पुरातत्व के भोध में । प्राचीन भारतीय साहित्य और धर्म के वैज्ञानिक अध्ययन में और नई-पुरानी भारतीय भाशाओं के वैज्ञानिक विवेचन में यूरोपियन पंडितों ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया । उनका मानना है कि आगे के हिन्दी साहित्य के लेखन पर भी इसका बड़ा गहरा असर हुआ ।

११. नवजागरण

अंग्रेजों के भारत में आगमन से भारतीय जनमानस प्रभावित हुआ इसका सीधा सा प्रमाण यह है कि इस देशा के जिस भाग से उनका प्रभुत्व स्थापित हुआ उसी भाग से भारतीय में नव जागरण और आधुनिकता की चेतना का प्रारम्भ हुआ । सबसे पहले अंग्रेजों ने सन् १७५७ ई० में प्लासी की लड़ाई जीतकर बंगाल पर अपना प्रभुत्व जमाया, ए०सी० सरकार ने इस वर्श से बंगाल में मध्यकाल का अंत और आधुनिक काल का प्रारम्भ माना है । १८१८ में महाराश्ट्र अंग्रेजों के अधीन हुआ । महाराश्ट्र में आधुनिकता का प्रारम्भ इसी वर्श से माना जाता है । सन् १८५६ में अवध अंग्रेजों के अधीन हुआ । अवध के अंग्रेजों के अधीन होते ही लगभग सारा भारत वर्श उनके अधीन हो गया । लेकिन अगले ही वर्श १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का सूत्रपात भी यही से हुआ । जिस क्रम से और जिन स्थानों से भारत पर अंग्रेजों का भाासन स्थापित होना भाुरू हुआ । उसी क्रम से और उन्हीं स्थानों से अंग्रेजी प्रशाासन, शिक्षा, संस्थाएं, पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशान, समाजसुधार के आंदोलन आदि का प्रारम्भ हुआ। कलकत्ता में १८०० में 'ओरियन्टल सैमिनरी की स्थापना की गयी, जो बाद में फोर्टविलियम कॉलेज कहलाया, इससे पहले १७८० में कलकत्ता में 'कलकत्ता मदरसा' और १७९१ में बनारस में 'बनारस संस्कृत कॉलेज, खोले गये थे । १८५७ में कलकत्ता, मद्रास और बम्बई विशवविद्यालयों की स्थापना बहुत बाद में हुई । सबसे पहले राजा राममोहन राय ने 'ब्रहा समाज' की स्थापना की और मूर्तिपूजा, जाति प्रथा सतीप्रथा आदि का विरोध किया तथा विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, स्त्री-पुरूश की समानता अंग्रेजी शिक्षा आदि का समर्थन किया ।

इनके अतिरिक्त अंग्रेजों अथवा ईसाई-मिशानरियों ने जो शिक्षा संस्थाएँ स्थापित की उनके पीछे उनका स्वार्थ था । अंग्रेजी भाासक शिक्षा संस्थानों के माध्यम से क्लर्क पैदा करना चाहते थे और ईसाई मिशनरी ईसाईयत फैलाना चाहते थे । पहले उन्होने भारतीय भाशाओं को बढ़ावा दिया और उन्हे शिक्षा का माध्यम बनाया किन्तु भीघ्र ही उन्होने अनुभव किया कि उनका स्वार्थ भारतीय भाशाओं को माध्यम बनाने से सिद्व नहीं होगा । इसलिए १८३५ में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बना दिया गया । अंग्रेजी शिक्षा और माध्यम का प्रारूप लार्ड मैकोल ने तैयार किया । उनके सामने

स्पश्ट लक्ष्य था ''हम भारत में पशिचमी सभ्यता, संस्कृति का प्रभुत्व तब तक स्थापित नहीं कर पायेगें जब तक भारतीय शिाक्षा पद्वति से संस्कृत भाशा को पूरी तरह निश्कासित नही कर देते। अंग्रेजी शिाक्षा पद्वति से संस्कृत ही नही अन्य भारतीय भाशाओं को भी निकाल दिया गया । कमोवेशा यह स्थिति आज भी है । विदेशाी पुरान्वादियों ने प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति को भी इसी उद्देशय से खोजा । वे सिद्व करना चाहते थे कि भारत का अतीत चाहे जैसा रह हो, आज वे असभ्यता की की चरम सीमा पर पहुँचे हुए है । उन्हें सभ्य और सुसंस्कृत, पशिचमी सभ्यता, शिाक्षा-दीक्षा एवं जीवन पद्वति का अनुकरण ही बना सकता है । शिाक्षा की तरह ही रेल, सड़क, डाक-तार इत्यादि का अंग्रेजों ने पूरे देशा में जो जाल बिछाया वह भी अपनी स्वार्थ सिद्वी के लिए ही था ।

इन सबसे जागरण तो हुआ लेकिन दो दिशााओं में एक दिशाा, मानसिक दासता और अंग्रेज भक्ति की थी । बंगाल में १९वीं भाताब्दी में एक युवा पीढ़ी सामने आयी जिसे हर चीज जो भारतीय हो उससे घृणा थी और हर अंग्रेज वस्तु और चीजों के प्रति प्रेम और भक्ति का भाव था । पालने में से ही बच्चें इंग्लैड भेज दिये जाते थे जिससे अपनी मातृभाशा बंगाली ने सीख लें, अंग्रेजी सीखे पूरी तरह अंग्रेज बनकर भारत लोटे । माइकेल मधुसूदन दत्त इस प्रवृत्ति का ज्वलंत उदाहरण है । उनकी सभी भाताब्दी में प्रारम्भ हुई मानसिक दासता की यह परम्परा आज भी विद्यमान है । चाहे प्रयास हो, शिााक्षा हो, व्यापार हो अथवा सभ्यता-संस्कृति हो, शिाक्षित भारतीयों का बहुत बड़ा वर्ग आज भी यह अनुभव करता है कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता । जागरण की दूसरी दिशाा, मानसिक स्वाधीनता की थी । नये बने वातावरण ने भारतीय को मध्यकालीन जड़ता तरह-तरह के अंधविशवासों और रूढ़ियों से मुक्त किया । उन्हे इस अर्थ में आधुनिक बनाया कि वे लॉकिक जीवन और उसकी समस्याओं को महत्व देने लगें । अपने स्वर्णिम अतीत पर गर्व करते हुए वर्तमान अधोगति को पहचानने लगे विशवास की अपेक्षा बुद्वि को महत्व देते हुए विभिन्न प्रकार के सुधारों में संलग्न होने लगे तथा नये को अपनाने में उनकी हिचक दूर हुई । उन्हें अपनी पराधीनता का बोध हुआ और उनमें राश्ट्रीयता की भावना जागृत हुई । राश्ट्रीयता की भावना ने उन्हें अखिल भारतीय एकता का बोध जितना स्पश्ट और प्रखर हिन्दी क्षेत्र में था, उतना अन्य क्षेत्रों में नहीं । भारतेन्दु के बलिया वाले भाशण के इस अंशा से यह बात स्पश्ट हैं - ''भाई हिन्दुओं तुम की मममतांतर का आग्रह छोड़ो । आपस में प्रेम बढ़ाओं इस महामंत्र का जप करो । जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग, किसी जाति का क्यों न हो, वह हिन्दु है । हिन्दु की सहायता करो । बंगाली, मराट्ठा, पंजाब, मदरासी, वैदिक, जैन, ब्राहमणों, मुसलमान सब एक हाथ एक पकड़ो । कारीगरी जिसमें तुम्हारे यहॉ बढै तुम्हारा रूपया तुम्हारे ही देशा में रहे । वह करो देखो जैसे हमार धारा होकर गंगा समुन्द्र में मिलती है वैसे ही तुम्हारी लक्ष्मी हजार तरह से इंग्लैण्ड, फरासीस, अमेरिका को जाती है'' यह नवजागरण की गूंज सर्वत्र सुनाई पड़ती है । जिसके कारण लोगों में नई चेतना का विकास हुआ है। नवजागरण में सबसे महत्वपूर्ण बाते निम्न हुई:

१२. स्त्री शिक्षा का अभियान

राजा राममोहन राय से लेकर सर सैय्यद अहमद खॉं और भारेन्दु तक उस दौर के तमाम भारतीय बुद्वि-जीवियों ने शिाक्षा के प्रसार पर अत्याधिक बल दिया । भारतेन्दु ने शिाक्षा आयोग को दिए वक्तव्य में विस्तार से बताया है कि भारत को किस तरह की शिाक्षा की जरूरत है और उसके लिए किस तरह के कदम उठाए जाने चाहिए । भारतेन्दु अपने वक्तव्य का आरम्भ ही इस बात से करते है । ''अपने देशा-वासियों के भौक्षिक स्तर को उॅचा उठाना, इस प्रांत की भाशा में सुधार करना तथा इस भाशा में साहित्य वृद्वि करना सदैव से मेरा ध्येय रहा है।''

शिाक्षा के प्रसार के लिए उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों का बल कितना ज्यादा था इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उस दौर के आंरम्भिक गद्य साहित्य का मुख्य मुद्दा यही था । हिन्दी के पहले पत्र 'उंदत भार्तड ;१८२६द्ध के चार साल पहले बंगला में स्त्री शिाक्षा के समर्थन और प्रचार हेतु श्री गौर मोहन विद्यालंकार ने एक पुस्तक 'स्त्री शिाक्षा विद्यायक' के नाम से लिखी थी । बंगाल में प्रकाशान के अगले साल सन् १८२३ में इसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो गया । यह बात इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी भाशी बुद्विजीवी कितनी तीव्रता से स्त्री शिाक्षा के प्रसार की जरूरत महसूस कर रहे थे । पं. गौरीशांकर की रचना 'देवरानी जेठानी की कहानी' में ऐसी दो बहुओं की कहानी कही गई जिसमें से एक शिाक्षित और दूसरी अनपढ़''। यह हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता

है और इसकी रचना सन् १८७० में हुई थी । पं. श्रृद्धाराम फिल्लांरी की रचना भाग्यवती जिसका प्रकाशान सन् १८७० में हुई थी । इस उपन्यास की रचना का मकसद ही यह है कि इससे लोगों तक यह संदेशा पहुँचाया जा सके कि स्त्री के शिक्षित होने से घर-परिवार को कितना लाभ पहुँचता है ? उस दौर के लेखकों ने लेखो और निबन्धों के द्वारा ही नही बल्कि कहानियों और उपन्यासों के द्वारा यह बताने का प्रयास किया कि स्त्री शिक्षा देशा और समाज की उन्नति के लिए क्यों जरूरी है ।

लेकिन सन् १९८२ में प्रकाशित पुस्तक 'सीमंतनी उपदेशा', स्त्री, शिक्षा के ठोस परिणामों को हमारे सामने लाती है । यह पुस्तक पंजाब की एक शिक्षित महिला ने लिखी थी जिसने अपना नाम अजागर नही क्या यह पुस्तक इस बात का ठोस प्रणाम है कि शिक्षा ने स्त्री चेतना को किस सीमा तक बदला था । यह स्त्री जाति की क्रांतिकारी चेतना का दस्तावेज है । वह उन महान पुरूशों का आदर के साथ उल्लेख करती है जिन्होने स्त्री शिक्षा के लिए प्रयत्न किया और जो स्त्री को सदियों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील रहे । इनमें राजा राममोहन राय स्वामी दयानंद और भारतेन्दू भी भाामिल है । इसके बावजूद किताब पहले से यह जाहिर हो जाता है कि इसमें व्यक्त विचारों को एक स्त्री ही पेशा कर सकती है । एक अर्थ में इसे हिन्दी की पहली नारीवादी रचना भी कहा जा सकता है । इस प्रकार स्त्री शिक्षा का अभियान उस समय चलाया गया ।

१३. स्वधर्म चेतना का भाव

आधुनिक शिक्षा के प्रचार में उन ईसाई मिशानरियों का बड़ा हाथ था जो अंग्रेजी भाासन की स्थापना के साथ ही भारत के विभिन्न प्रांतो में धर्म प्रचार के लिए काम करने में लगी थी। उन्होने हिन्दी सहित विभिन्न भारतीय भाशाओं में ईसाई धर्म से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशान किया । इसके लिए आधुनिक भारतीय भाशाओं में प्रेस की स्थापना की । इन मिशानरियों ने स्कूल और कॉलेज खोले । उनके इन प्रयासों पर टिप्पणी करते हुए अपनी इतिहास पुस्तक में रामचंद्र भाुक्ल ने लिखा कि ''कहने की आवशयकता नही कि ईसाईयों के प्रचार कार्य का प्रभाव हिन्दुओं की जनसंख्या पर भी पड़ रहा था । अतः हिन्दुओं के शिक्षित वर्ग के बीच स्वधर्म रक्षा की आकुशालता दिखाई पड़ने लगी । ईसाई उपदेशाक हिन्दू धर्म की स्थूल और बाहरी बातों को लेकर ही अपना खंडन-मंडन चलाते आ रहे थे । यह देखकर बंगाल में राजा राममोहन राय उपशिाश्ट और वेंदात का ब्रहाज्ञान लेकर उसका प्रचार करने खड़े हुए । नूतन शिक्षा के प्रभाव से पढ़े-लिखे लोगों में से बहुतों के मन में मूर्ति पूजा, तीर्थटन, जातिपांति, छुआछूत आदि के प्रति अश्रद्धा हो रही थी । अतः इन बातों को अलग करके भाुद्ध ब्रहोपासना का प्रवर्तन करने के लिए ब्रहामण-समाज की नींव डाली'' ईसाई धर्म के प्रचारकों के प्रभाव को हजारी प्रसाद द्विवेदी कुछ भिन्न ढंग से रखते है । वे लिखते है ''ईसाई धर्म के प्रचारक हिन्दू धर्म की तीव्र और कटु आलोचना कर रहे थे । इससे जहॉ एक ओर लोगों के चित्र में क्षोभ हो रहा था, वहाँ दूसरी ओर अपनी कमजोरियों का ज्ञान भी हो रहा था । ईसाई धर्म प्रचारकों ने सती-दाह, कन्या वध आदि अनेक कुप्रथाओं का विरोध किया और कानून बनाकर उनका उच्छेदन करा दिया था । इस तरह वे हित समाज का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से हित कर रहे थे । उनके खंडनो और कटाक्षों से हिन्दू अपने समाज और धर्म के विशय में सोचने को बाध्य हुए।'' यह समाज सुधार और स्वधर्म रक्षा का अभियान की सिर्फ सवर्ण हिन्दू की नजर से ही सामने आता है और जब जातिपॉति को मिटाने की बात होती है तो भी दलित उनकी नजर में नही रहता बल्कि द्विज वर्ण ही रहते है ।

१४. समाज सुधार आंदोलन

बंगाल, महाराश्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, केरल आदि भारत के विभिन्न प्रांतो में जो समाज सुधार आंलोदन चले उसको चलाने का श्रेय ऐसे महापुरूशों को था, जिन्होने जनता के बीच जाकर यह काम किया और लोगों को इस कार्य के लिए एकजुट किया । लेकिन हिन्दी-उर्दू प्रदेशाों में सैय्यद अहमद खॉं के सिवा ऐसा कोई महापुरूश उन्नीसवीं सदी में नहीं हुआ । सैय्यद अहमद खॉं का आंदोलन मुस्लिम समाज तक सीमित था और हिन्दी-उर्दू विवाद के सम्बन्ध में उनके कारण प्रायः उनकी भूमिका को हिन्दी समाज में भी अनुकरणीय नहीं समझा गया । हिन्दू समाज में सुधार का यह कार्य प्रायः लेखको ने ही किया जिनमें सर्वोपरि भारतेन्दु थे । हिन्दी के लेखको पर बंगाल के ब्रहामण समाज और गुजरात के आर्य समाज का असर पड़ा । इसका भी बंगाल का असर सिर्फ शिक्षा के प्रसार तक ही सीमित था । इसके प्रभाव में

आकर हिन्दी के लेखको ने एक और पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करने की जरूरत महसूस की तो दूसरी ओर । उन्होने देशाी-विदेशाी साहित्य भी हिन्दी में अनुदित कर लोगों को नये विचारों से अवगत कराने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। समाज सुधार सम्बन्धी प्ररेणा उत्तर भारत में आर्य-समाज से ही ग्रहण की । आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती यद्यपि स्त्री शिक्षा के समर्थक थे, बाल-विवाह के विरोधी थे और जातिपांति का समर्थन नही करते थे । हिन्दु लेखकों पर आर्य समाज का प्रभाव इतना ही रहा कि उन्होने आर्य समाज के नजरिए से ही 'समाज-सुधार' का समर्थन किया ।

१५. अंग्रेजो का विरोध तथा देशाभक्ति और राश्ट्रवाद का विकास

भारतेन्दु की प्रसिद्व पंक्तिया निम्न है :

''अंग्रेज राज सुख साज साजे सब भारी ।
पै धन विदेशा चलि जात है अति ख्वारी ।।''

भारतेन्दु यह मानते है कि अंग्रेज राज के कारण वस्तुतः भारत देशा का बड़ा भारी हित हुआ है लेकिन इस राज की सबसे बड़ी खराबी यह है कि देशा का धन विदेशा चला जाता है। वे इसके ओर यह भी लिखते है कि मुस्लिम भाासक चाहे जितने बुरे क्यों न हो किन्तु वह देशा का धन विदेशा में नही ले जाते है । नवजागरण में लोगों के मन में नई चेतना जागी वे अग्रेजों की आलोचना करने लगते है । भारतेन्दु जी के अनुसारः

''भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसी-हँसी के तनमन धन मूसे ।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सीख साजन ? नहीं अंगेज''

उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशाकों में इस बुद्वि जीवी वर्ग का मोहभंग होने लगा था और राजभक्ति की भावना धीरे-धीरे कम होने लगी थी । यह एहसास होने लगा कि अगर भारत को भी उन्नत होना है तो खुद भारतीयों को आगे आना होगा ।

१६. निश्कर्श

इस प्रकार खड़ी बोली का विकास होने से 'गद्य' का उदय हुआ गद्य के विकास में फोर्टविलियम कॉलेज, ईसाई-मिशनरिीं, पत्रकारिताओं ने विशोश योगदान दिया । प्रेस की स्थापना होने से गद्य का विकास और अधिक से हुआ । धीरे-धीरे लोगों में इसके कारण चेतना जागृत हुई लोगों का मोहभंग हुआ कि विक्टोरिया तथा अंग्रेज उनका भला नहीं चाहते बल्कि वह इस देशा का धन लूटते जा रहे है । जिसके कारण लोगों में नई चेतना का जन्म हुआ । साहित्य के लेखक स्त्री-शिक्षा, आर्य समाज का सुधार करने लगे । उन्होने केवल रचनाएं ही नही बल्कि संस्थाएं भी स्थापित की । इसे ही नवजागरण कहा गया । इसे एक सूत्र में देखा जा सकता है ।

''खड़ी बोली का उदय - गद्य का उदय नवजागरण''

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण - डॉ. राम बिलास भार्मा ।
२. भारतेन्दु हरीशाचन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएंः डॉ. राम बिलास भार्मा ।
३. हिन्दी साहित्य का इतिहासः आचार्य राम चंद भाुक्ल ।
४. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह ।
५. हिन्दी साहित्यः उसका उद्भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
६. गद्य की सत्ता - राम स्वरूप चुर्तुवेदी ।
७. भारतेन्दु-युग और हिन्दी भाशा की विकास परम्परा - राम बिलास भार्मा ।
८. भारतेन्दु हरीशाचन्द और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ - राम बिलास भार्मा ।
९. भारत दुर्दशाा - भारतेन्दु हरीशाचन्द्र ।
१०. भारतीय चिंतन परम्परा - के.दामोदरन ।